

डॉ. क्रेग कीनर , रोमन्स, व्याख्यान 13

रोमियों 12:14-14:1 परिचय

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 12:14-14:1, परिचय पर सत्र 13 है।

पॉल अपने भाइयों और बहनों से प्यार करने और उनकी सेवा करने के बारे में बात कर रहा है और कैसे नया दिमाग हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम ऐसा कैसे कर सकते हैं।

पॉल अब बाहरी लोगों से प्रेम करने और न केवल किसी बाहरी व्यक्ति से प्रेम करने की बात करता है, बल्कि अपने शत्रुओं से भी प्रेम करने की बात करता है, 12, 14, और फिर श्लोक 17 से 21। वह कहता है, उन लोगों को आशीर्वाद दो जो तुम्हें सताते हैं, उन्हें शाप मत दो। अब प्राचीन काल में कुछ अन्य विचारक भी थे जिन्होंने गैर-प्रतिशोध का आग्रह किया था, और फिर भी यीशु और पॉल केवल गैर-प्रतिशोध से आगे निकल गए।

आप बस उन लोगों को कोस नहीं रहे हैं जो तुम्हें कोसते हैं। आप बस उन लोगों पर अत्याचार नहीं कर रहे हैं जो आप पर अत्याचार करते हैं। आप उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं, उन पर आशीर्वाद के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि ईश्वर ही वह है जो आपकी सहायता करता है।

ईश्वर वह है जो आपकी देखभाल करता है। और इसलिए, आपको अपना बचाव करने की आवश्यकता नहीं है। वह यहां यीशु की प्रतिध्वनि कर रहा है, ल्यूक 6.28, जहां आप उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं जो आपको सताते हैं।

कुछ ऐसे समाज हैं जो वास्तव में शाप देने का अभ्यास करते हैं, ठीक है, उस समाज में कुछ लोग ऐसे भी थे जो ऐसा करते थे, लेकिन आप शाप देने का अभ्यास एक द्वेषपूर्ण अर्थ में करते हैं, जैसे कि न केवल, आप जानते हैं, आप एक बेवकूफ हैं, बल्कि जैसे कि वे आत्माओं का आह्वान करते हैं तुम्हें श्राप देने के लिए. और मुझे, मेरी पत्नी को, उनमें से कुछ स्थानों का अनुभव है। लेकिन एक चीज जो हमने अनुभव की वह यह थी कि जब हम कहते हैं, ठीक है, वे जो भी कहते हैं, उससे बहुत दबाव हट जाता है, मेरा मतलब है, वे हमारे खिलाफ आत्माओं का आह्वान कर सकते हैं, हम भगवान से उन्हें आशीर्वाद देने के लिए प्रार्थना करते हैं।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह अपना प्यार उन पर प्रकट करें। और फिर भगवान हमारी देखभाल करते हैं क्योंकि हमारी नज़र श्रापों पर नहीं होती। हमारी नज़रें ईश्वर पर टिकी हैं जो वफादार है।

पॉल 12:17 में कहता है, बुराई का बदला बुराई से मत दो, बल्कि इस बात का ध्यान रखो कि हर कोई क्या अच्छा मानता है। तो, आप जानते हैं, आपकी सार्वजनिक गवाही के संदर्भ में कुछ चीजें

हैं, कुछ चीजें हैं जिन पर हर कोई सहमत है। आप जानते हैं, हम सभी सहमत हैं कि कुछ व्यवहार अच्छा है, कुछ व्यवहार अच्छा है।

सुनिश्चित करें कि आप वे काम करें। उनमें से कुछ चीजें वास्तव में ऐसी चीजें हैं जो संस्कृति में हो सकती हैं जिनके बारे में हम शायद नहीं सोचते कि वे उतनी महत्वपूर्ण हैं, लेकिन संस्कृति उन्हें महत्व देती है। वे गलत नहीं हैं।

हम परमेश्वर के सम्मान के लिए भी ऐसा कर सकते हैं। लेकिन विशेष रूप से बुराई का बदला न लेने के इस विचार के साथ, लोग अक्सर इसे देखेंगे और इसकी सराहना करेंगे। कुछ लोग सोचेंगे कि आप सिर्फ इसलिए कमजोर हैं क्योंकि आप बुराई का बदला नहीं लेते, लेकिन बुराई का बदला न चुका पाने में ताकत है।

स्टोइक्स ने कहा कि विरोध मत करो। विरोध न करने का कारण यह था कि वास्तव में आप जिस एकमात्र चीज़ को नियंत्रित कर सकते हैं, वह आप स्वयं हैं। आप अपने भाग्य को नियंत्रित नहीं कर सकते, आप यह नियंत्रित नहीं कर सकते कि लोग आपके साथ क्या करते हैं, इसलिए विरोध न करें।

वह स्टोइक दृष्टिकोण था। यहूदी संतों ने कभी-कभी अप्रतिरोध का आग्रह किया। जाहिर है, ये कट्टरपंथी नहीं हैं, लेकिन उन्होंने कभी-कभी गैर-प्रतिरोध का आग्रह किया।

और पुराने नियम में आपके पास यह है, लैव्यव्यवस्था 19:18, अपने पड़ोसी से प्रेम करते हुए उसका बदला बुराई से न देना, लैव्यव्यवस्था 24:29। हम न्याय के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा करते हैं, नीतिवचन 20:22। अपने शत्रुओं से प्रेम करने और अपने शत्रुओं को आशीर्वाद देने का विचार मेरे लिए कभी-कभी कठिन होता था। यहां तक कि उन्हें आशीर्वाद देना भी कभी-कभी उन्हें प्यार करने से ज्यादा आसान होता था। लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन से दुश्मन हैं।

जब मैंने चमत्कारों पर एक किताब लिखी, तो इंटरनेट पर कुछ नास्तिक थे। अब ये सभी नास्तिक नहीं हैं। कुछ नास्तिक, बस यही सोचते हैं।

लेकिन कुछ नास्तिक ऐसे भी थे जो इंटरनेट पर बहुत ही अमित्र हैं। इंटरनेट पर कुछ ईसाई भी हैं जो बहुत अमित्र हैं, जो यह नहीं देखते कि पॉल यहां क्या कहता है। लेकिन वैसे भी, ये नास्तिक ऐसा दिखावा कर रहे थे कि कीनर इतना मूर्ख है कि वह वास्तव में इन चीजों पर विश्वास करता है।

खैर, किताब यह दिखाने के लिए थी कि यदि आप तर्क पढ़ें तो मेरे पास उन चीजों पर विश्वास करने का अच्छा कारण है। लेकिन किसी भी मामले में, मैं उनसे प्यार करता था। मैं नास्तिक था।

मैं समझ गया, और मैं उनसे नाराज नहीं था। लेकिन एक ऐसा समूह था जिसे मैं वास्तव में पसंद नहीं करता था, और ऐसा कुछ चीजों के कारण था जो मैंने उत्तरी नाइजीरिया में देखी थीं। इससे पहले कि कोई बोको हराम के बारे में बात करता।

यह 90 के दशक के उत्तरार्ध की बात है, जब कुछ जिहादी ईसाइयों के साथ-साथ उदारवादी मुसलमानों की भी हत्या कर रहे थे। बाद में, कुछ युवा ईसाइयों ने जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी। जिहादी यही तो चाहते थे, लोगों को आपस में लड़ाना।

लेकिन मेरे कुछ दोस्त ऐसे थे जो एक लाश और बिना पानी के तीन दिनों तक चर्च की घेराबंदी में थे। इस तरह की चीज़ों ने मुझे, आप जानते हैं, मुझे वहां मौजूद अपने भाइयों और बहनों से प्यार करने वाला बना दिया। मैंने तीन गर्मियाँ वहाँ सेवा करते हुए बितायीं।

मुझे वास्तव में जिहादियों से प्यार करने में परेशानी थी। इसका मतलब यह नहीं है, मेरा मतलब है कि हमें अभी भी न्याय के लिए काम करना है। हमें अभी भी शांति के लिए काम करना है।

आप जानते हैं, हमें शांति लाने के लिए पुलिस प्रयासों या कभी-कभी सैन्य प्रयासों के लिए काम करना होगा। कम से कम मेरी तो यही राय है। मैं नहीं चाहता, ठीक है, मुझे अब शांतिवाद और केवल युद्ध में नहीं पड़ना चाहिए।

लेकिन किसी भी मामले में, मुझे उसमें नहीं पड़ना चाहिए। लेकिन अपने दुश्मनों से प्यार करने का यह मुद्दा, मैं और मेरी पत्नी युद्ध के बाद शांति और सुलह के बारे में कोटे डी आइवर में पादरी को पढ़ाने जा रहे थे। और वहां मुद्दा जिहादियों का नहीं था।

यह एक जातीय संघर्ष था, एक क्षेत्रीय संघर्ष था। लेकिन इस उड़ान में मैं अटलांटिक के आधे रास्ते पर था। मेरी पत्नी सो रही थी और मैं अपने आप में संघर्ष कर रहा था।

मुझे यह महसूस नहीं हुआ। मुझे ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मैं यह अधिकार सिखा सकता हूँ और अपने दुश्मनों से प्यार कर सकता हूँ। और यही मुझे दोषी ठहरा रहा था।

इसका कारण यह है कि मैं अपने शत्रुओं से प्रेम नहीं करता। मुझे इन लोगों से प्यार नहीं था। मैं उनके लिए प्रार्थना नहीं कर रहा था।

मैं बस, ऐसा था जैसे मैं उन पर क्रोधित था। और इससे पहले निपटना होगा क्योंकि अगर मुझे बहुत कठिन परिस्थितियों में अन्य लोगों को अपने दुश्मनों से प्यार करने के लिए कहना है, तो मुझे उन लोगों से भी प्यार करना होगा जिन्हें मैं अपने दुश्मनों के रूप में गिनता हूँ। और अन्यथा, मैं एक पाखंडी हो जाऊँगा और मैं ईश्वर के उसी आशीर्वाद का अनुभव नहीं कर पाऊँगा जैसा कि मैं संदेश पढ़ा रहा था।

अब, इसके विपरीत, उससे कुछ साल पहले, उस समय के दौरान जब कुछ लोग शरिया कानून की मांग करते हुए कडुना में विरोध प्रदर्शन कर रहे थे, और तब दक्षिणी कडुना राज्य से कुफ और बाशान से कुछ ईसाई आए थे, और वे शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। उन्होंने कहा, नहीं, हम शरिया कानून नहीं चाहते जो पूरे राज्य को कवर करता हो। और उन्हें उन लोगों द्वारा गोलियों से भूनना शुरू कर दिया गया जिनके पास अर्ध-स्वचालित हथियार वगैरह थे। और मैंने और मेरे एक छात्र ने, जो कडुना राज्य से था, इस बारे में सुना।

और जो कुछ उसने सुना था, उससे उसने सोचा कि उसकी पत्नी, उसके भाई और उसका चचेरा भाई इस विरोध का हिस्सा थे। और उसके चचेरे भाई की हत्या कर दी गई। और वह नहीं जानता था कि उसके भाई और उसकी पत्नी अभी भी जीवित हैं या नहीं।

और हम एक साथ प्रार्थना कर रहे थे। और मैं ईश्वर से उसके नाम के सम्मान की रक्षा के लिए प्रार्थना कर रहा था। और मुझे लगा कि मैंने वास्तव में अच्छी प्रार्थना की।

लेकिन फिर संडे अगुंग, मेरा छात्र, जो नहीं जानता था कि उसकी पत्नी और उसके भाई जीवित हैं या नहीं, उसने प्रार्थना की, भगवान, कृपया इन लोगों को माफ कर दें जिन्होंने ऐसा किया और उन्हें अपना प्यार दिखाएं क्योंकि उन्हें आपके बिना कोई उम्मीद नहीं है। और मैं अपने ऊपर लज्जित हुआ, और जान लिया कि मैं परमेश्वर के जन के साम्हने हूं। और रविवार को अपनी पीएच.डी. करने चला गया। फुलर पर.

वह अब नाइजीरिया के मध्य क्षेत्र में जातीय सुलह और शांति के लिए काम कर रहे हैं। खैर, 12:18, पॉल कहते हैं, सभी के साथ शांति से रहें। वह शांति की बात करते रहे हैं।

यह संबंधपरक शांति है। लेकिन जब तक यह आप पर निर्भर करता है तब तक सबके साथ शांति से रहें। 12:19, अपना बदला मत लो।

भगवान के क्रोध के लिए एक जगह छोड़ दो। खैर, जहां तक यह आप पर निर्भर करता है, कभी-कभी हम इसमें मदद नहीं कर सकते। लोग हमसे लड़ना चाहते हैं।

लेकिन अक्सर हम जो कर सकते हैं, कर सकते हैं, कर सकते हैं। वर्षों पहले एक स्कूल में मेरे साथी प्रोफेसर के साथ मेरा झगड़ा हो गया था, जहां कुछ प्रोफेसर कुछ कक्षाओं में आते थे और ऐसी बातें कहते थे, जैसे कि कोई भगवान नहीं है। भले ही उन्हें इस पर विश्वास नहीं था, वे सिर्फ शैतान के वकील की भूमिका निभाना चाहते थे।

लेकिन आप जानते हैं, शैतान के पास पर्याप्त वकील हैं। उन्होंने इसे शैतान के पाले में छोड़ दिया और आप जानते हैं, उन्होंने कभी भी इसे साफ़ करने की कोशिश नहीं की। और उनमें से कुछ ने कहा, ठीक है, मेरे पास एक ऐसा व्यक्ति था जो वास्तव में विश्वास नहीं करता था कि यीशु मृतकों में से जी उठे थे।

यह एक मदरसा था। उसे विश्वास नहीं था कि यीशु मृतकों में से जी उठे थे। उसे विश्वास नहीं था कि हम कभी भी मृतकों में से जीवित हो सकेंगे।

जैसा कि मुझे याद है, मुझे लगता है कि वह मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास नहीं करते थे। वह वास्तव में एक हजार सदस्यीय चर्च का पादरी था। लेकिन, आप जानते हैं, उसने ये बातें चर्च में नहीं कही थीं।

वह और मैं वास्तव में अच्छे दोस्त थे। लेकिन एक और प्रोफेसर थे जहां हम कुछ हद तक असमंजस में थे, जहां वह जो बातें अपने छात्रों से कह रहे थे और छात्र आकर कहते थे, हाँ, वह,

अपनी कक्षा में एक बिल्कुल अलग विषय पर, उन्होंने कहा, किसी भी बात पर विश्वास मत करो क्रेग कीनर अपनी कक्षाओं में कहते हैं। वह नहीं जानता कि वह किस बारे में बात कर रहा है, भले ही मैं अपने अनुशासन में पढ़ा रहा था, उसके अनुशासन में नहीं।

लेकिन वैसे भी। और इसलिए, मुझे दृढ़ रहने की ज़रूरत थी क्योंकि छात्र उन्हें देने के लिए मुझ पर निर्भर थे, आप जानते हैं, कम से कम दूसरा पक्ष। लेकिन साथ ही, मैंने उस कहावत के बारे में भी प्रार्थना करना शुरू कर दिया जो कहती है कि प्रभु आपके दुश्मनों को भी आपके साथ शांति से रहने के लिए तैयार कर सकता है।

और हमें वास्तव में दोस्त बनना है। परन्तु मुझे यह भी देखना था कि नीतिवचन उस धर्मी व्यक्ति के बारे में क्या कहता है जो दुष्टों के सामने रास्ता छोड़ देता है वह प्रदूषित कुएँ के समान है। इसलिए, शायद मैं उस तुलना की सराहना नहीं करता।

लेकिन किसी भी मामले में, हम अंततः दोस्त बन गये। और वास्तव में छात्र भी ठीक हो गए, जो मेरी प्रार्थना का हिस्सा था। लेकिन मत करो, अपना बदला मत लो।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह हमेशा इसी तरह से काम करता है, लेकिन खुद से बदला न लें। भगवान के क्रोध के लिए जगह छोड़ें, पद 19। दूसरे शब्दों में, यदि आप अपना बदला नहीं लेते हैं, तो भगवान इसका ख्याल रखेंगे।

यदि आप अपना बदला लेते हैं, तो यह वैसा ही है, जैसा मैथ्यू अध्याय छह में कहा गया है। ठीक है, यदि आप जानते हैं, आप, आप, दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं कि वे आपको देखें, आप अपना दान देते हैं ताकि दूसरे आपको देख सकें, आप जानते हैं, आप ऐसा करते हैं जैसे कि भगवान आपको नहीं देख रहे हैं। आपके पास पहले से ही आपका इनाम है।

और नीतिवचन इस बारे में बात करते हैं, ठीक है, आप जानते हैं, जब आपका दुश्मन लड़खड़ाता है, तो खुश मत होइए, ऐसा न हो कि भगवान इसे देख लें और, आप जानते हैं, कर्हें, ठीक है, मुझे इस व्यक्ति की मदद करने दो। भगवान के क्रोध के लिए एक जगह छोड़ दो। वह व्यवस्थाविवरण 32, श्लोक 35 को उद्धृत करता है।

खैर, वह वास्तव में व्यवस्थाविवरण 32 को पसंद करता है। वह अध्याय 10 और पद 19 में और अध्याय 15, पद 10 में वापस आने जा रहा है। इसलिए, वह इसे निम्नलिखित अध्यायों या पिछले अध्याय में कुछ बार उद्धृत करेगा, वह इसे पहले ही 10:10, 19 पहले और 15:10 बाद में उद्धृत किया जा चुका है।

अपना बदला मत लो, भगवान के क्रोध के लिए जगह छोड़ दो। मुझे लगता है कि वह निम्नलिखित छंदों में उस बिंदु पर वापस आने वाला है। अब इसका मतलब यह नहीं है कि हम चाहते हैं कि उन्हें भगवान का क्रोध मिले, लेकिन वैसे भी, जिस तरह से वह इसे कहते हैं, 12:20 से 21, वह नीतिवचन 25:21 से 22 तक उद्धृत कर रहे हैं।

यदि आपका शत्रु भूखा है तो उसे खाना खिलाएं। यदि तेरा शत्रु प्यासा हो, तो उसे पानी पिला। ऐसा करके, तुम उनके सिर पर, उनके सिर पर आग के कोयले ढेर कर देते हो।

खैर, लोगों ने विभिन्न तरीकों से और कभी-कभी ऐसे तरीकों से इसकी व्याख्या की है जो अच्छे लगते हैं, जैसे कि आप वास्तव में उन्हें और अधिक परेशानी में डालने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मुद्दा वास्तव में आदर्श रूप से यही है कि हम उन्हें मित्र बनने के लिए जीतना चाहते हैं। हम दुश्मनी मिटाना चाहते हैं।

हालाँकि, यदि वे नहीं बदलते हैं, यदि वे दुष्ट बने रहते हैं, यदि वे शत्रुतापूर्ण बने रहते हैं, तो यह उन पर आग के अंगारों का ढेर लगाने जैसा है, अर्थात् उन्हें इसके लिए और भी बुरा निर्णय मिलने वाला है। लेकिन श्लोक 21 में लक्ष्य अपने शत्रु को मित्र में बदलना है। यह उन्हें सही तरीके से जीतना है।

असल में, मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने उन लोगों के लिए ऐसा किया है जो उनके दुश्मन थे, और जो उनके पास पहुंचे। वास्तव में, जब मेरी पत्नी युद्ध के दौरान शरणार्थी थी, तो कोई था जिसे पकड़ लिया गया था और यह मान लिया गया था कि वह किसी दूसरे देश में जासूस है। सबूतों को देखते हुए, मुझे लगता है कि वह शायद वास्तव में जासूस नहीं था, लेकिन उसके बारे में कहा गया था कि वह जासूस था।

वह उनसे इसलिए मिली क्योंकि उन्हें प्रतिरोध के लिए अनुवाद करने के लिए मजबूर किया गया था क्योंकि वह एक से अधिक भाषाएँ जानती थीं। वह अंग्रेजी बोलने वाला था। यह एक फ्रांसीसी भाषी देश था जिसका वह हिस्सा थी।

वह द्विभाषी थी, वास्तव में, वह क्विटलभाषी थी। इसलिए उसे जो कुछ वह कह रहा था उसका अनुवाद करना पड़ा। खैर, जब उन्हें उससे कोई जानकारी नहीं मिली क्योंकि उसके पास कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन फिर भी उन्हें लगा कि वह एक जासूस है, उन्होंने उसकी पिटाई की और फिर उसे जाने दिया।

बाद में, वह कुछ खाना बना रही थी। उनके पास बमुश्किल अपने लिए पर्याप्त भोजन था, लेकिन उसने उसे देखा, और वह भूखा था, और उसने उसे खाना खिलाया। तब से, वह आ जाता था, और वे उसकी देखभाल के लिए अपने भोजन में से कुछ का त्याग भी कर देते थे।

ईसाई होने के नाते हमें इसी तरह रहना चाहिए। मेरा मतलब है, वैसे भी यह उसका युद्ध नहीं था। वह युद्ध नहीं चाहती थी, लेकिन ऐसे मामलों में भी जहां हमारे बीच मजबूत भावनाएं और मजबूत असहमति है, हमें लोगों तक पहुंचने और उन्हें प्यार दिखाने की जरूरत है।

हम कई उदाहरण दे सकते हैं जब ईसाइयों ने ऐसा किया है, और दुर्भाग्य से, ऐसे भी कई उदाहरण हैं जब ईसाइयों ने ऐसा नहीं किया है। कभी-कभी छद्म-ईसाई, लेकिन कभी-कभी ऐसे लोग जो सोचते हैं कि मानवीय तरीकों से भगवान के नाम की रक्षा करना सबसे अच्छा है और वे भूल जाते हैं कि हमें अपने दुश्मनों से प्यार करने के बारे में यहां क्या बताया गया है। अध्याय 13, श्लोक 1 से 7. खैर, जरूरी नहीं कि रोम ईसाइयों का दुश्मन था।

बाद में नीरो के अधीन, उन्हें सताया गया, लेकिन इस समय, नीरो ईसाइयों पर अत्याचार नहीं कर रहा था। जब पॉल ने यह पत्र लिखा तब भी वह सेनेका और बुरस के प्रभाव में था। रोमियों 13, 1 से 7 तक, राज्य के प्रति समर्पित होने की बात करता है।

इसलिए, यह बाहरी लोगों के साथ संबंधों के बारे में पिछले अध्याय के श्लोक 14 से 21 तक के विचार को जारी रखता है। प्राचीन काल में राज्य के अधीन होना एक सामान्य विषय था। अक्सर, जब दार्शनिक या नैतिकतावादी वक्ता इस विषय पर चर्चा करते थे तो इसे घरेलू या अन्य रिश्तों के साथ-साथ माना जाता था।

स्टोइक्स और अन्य लोगों ने इस बारे में बहुत सारी बातें कहीं। और यह साम्राज्य में यहूदी लोगों जैसे अल्पसंख्यक समूहों के लिए भी एक मुद्दा था। जाहिर है, यह कुछ ऐसा नहीं था जिसके बारे में कट्टरपंथी और अन्य क्रांतिकारी, जो जल्द ही रोम के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व करेंगे, सोच रहे थे।

लेकिन निश्चित रूप से, रोम में यहूदी लोगों ने इस बारे में सोचा। खैर, हम यहां खराब प्रतिष्ठा नहीं पाना चाहते। हम दोबारा शहर से बेदखल नहीं होना चाहते।

इसलिए, वे अक्सर इस बारे में बात करते थे कि हम इस बड़े समाज के भीतर कैसे कार्य कर सकते हैं? अब, हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि जब लोग इस विषय पर लिखते थे, तो यह एक सामान्य सिद्धांत था जो राज्य की परोपकारिता को मानता था। यह बुराई की सिफ़ारिश नहीं कर रहा था, राज्य के आदेश पर बुराई कर रहा था। यदि आप जर्मनी में हैं, तो यह नाज़ियों का समर्थन करने की अनुशंसा नहीं है, जहां उन्होंने बहुत सारे चर्च पर कब्ज़ा कर लिया है।

लेकिन ऐसे लोग भी थे जो कबूल करने वाले चर्च का हिस्सा थे, जैसे डिट्रिच बोन्होफ़र, जिन्होंने कहा, नहीं, हम जो सही है उसके लिए खड़े होंगे। हम इसका हिस्सा नहीं बनने जा रहे हैं। या यदि आप युगांडा में थे और ईदी अमीन लोगों को मारने या कुछ और करने का आदेश दे रहा है, तो यह एक सामान्य सिद्धांत है।

यह हमेशा नहीं कह रहा है। और यह कुछ ऐसा है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कुछ धर्मशास्त्रियों जैसे कार्ल बार्थ या यह स्विस धर्मशास्त्री जो मुक्ति के इतिहास पर काम कर रहे थे, ऑस्कर कोलमैन और अन्य लोगों ने आपको कुछ चेतावनी दी थी कि इस मार्ग को कैसे नहीं लेना चाहिए। फिर, दक्षिण अफ्रीका में, रंगभेद के समय में, आपके पास ऐसे लोग थे जो इस मार्ग का गलत तरीके से उपयोग कर रहे थे।

और कुछ ऐसे भी थे जो कह रहे थे, नहीं, यह राज्य के प्रति पूर्ण निष्ठा नहीं है। लेकिन दूसरी ओर, सामान्य परिस्थितियों में यह अभी भी हमारे लिए एक अच्छा संदेश है जहां हमें उन लोगों का सम्मान करने की ज़रूरत है जो सत्ता में हैं और राज्य के प्रति उचित सम्मान दिखाना चाहिए, चाहे राज्य कोई भी हो। चाहे राज्य चीन हो, चाहे राज्य रूस हो, चाहे राज्य संयुक्त राज्य अमेरिका हो, चाहे वह बोलीविया या चिली हो, या कोई भी राज्य हो, अगर हम उस देश के नागरिक हैं, तो हमें अपनी सरकार के प्रति सम्मानजनक होना होगा।

सेटिंग। घोटाले से बचना ज़रूरी था. अल्पसंख्यकों के बारे में बात करें.

यहूदी समुदाय अल्पसंख्यक था. ईसाई निश्चित रूप से अल्पसंख्यक थे। कम से कम उनके कुछ नेताओं को वर्ष 49 में निष्कासित कर दिया गया था।

पॉल द्वारा यह पत्र लिखे जाने के 10 साल से भी कम समय बाद, वर्ष 64 में उन पर घातक झूठे आरोप लगने वाले थे। नीरो अभी तक ईसाइयों की हत्या नहीं कर रहा था, लेकिन जहां तक यह हम पर निर्भर करता है, वहां तक प्रतिष्ठित बने रहना, जहां तक यह हम पर निर्भर करता है, सभी के साथ शांति रखना, वास्तव में एक अच्छा विचार था। और पॉल यह जानता था, भले ही वह शायद ठीक से नहीं जानता था कि क्या होने वाला है।

रोम में यहूदी लोगों का यहूदिया के साथ घनिष्ठ संबंध था, लेकिन वर्ष 66 में यहूदिया में विद्रोह के बाद वे उससे जुड़ना नहीं चाहते थे। तो, यह वास्तव में बुद्धिमत्ता थी। और यह इस सेटिंग के लिए सिर्फ बुद्धिमत्ता नहीं है, बल्कि इस सेटिंग ने निश्चित रूप से इस तरह की चर्चा को आमंत्रित किया है।

पॉल यहां सरकार के कुछ लाभों और संगठित समाज के कुछ लाभों के बारे में बात करते हैं। परमेश्वर शासकों पर संप्रभु है। हम इसके बारे में पुराने नियम में पढ़ते हैं।

वह राजा का हृदय जहाँ चाहता है वहाँ मोड़ देता है। असल में, हम इसका उपयोग प्रार्थना में कर रहे थे जब हम कोशिश कर रहे थे कि हमारी बेटी हमारे साथ रहने के लिए आप्रवासन में सक्षम हो सके। क्रॉस ने स्वयं रोमन अन्याय का संकेत दिया।

मेरा मतलब है, केवल क्रूस के बारे में सोचने से, आप जानते हैं कि यह अन्याय का कार्य था। इसलिए, ईसाई आस्था के मूल में यह स्वीकारोक्ति है कि रोमन साम्राज्य में अन्याय था। हम जानते हैं कि अदालतों ने अमीरों का पक्ष लिया।

वास्तव में, इसके तुरंत बाद, दूसरी शताब्दी में, संभवतः, इसे रोमन कानून में लिखा गया था, जैसा कि अक्सर प्राचीन या पूर्वी कानूनी संग्रहों में लिखा जाता था। आपकी सज़ा आपके सामाजिक वर्ग पर निर्भर करती थी। लेकिन अदालतें आम तौर पर अमीरों का पक्ष लेती थीं।

अगर ज़रूरत हो तो अमीर लोग गरीब लोगों पर मुकदमा कर सकते हैं और अपना रास्ता निकाल सकते हैं। गरीब लोग, आप किसी अमीर व्यक्ति को अदालत में नहीं खींच सकते। यह काम नहीं करेगा.

न्यायाधीश सभी अमीर वर्ग से थे इत्यादि। तो, अन्याय हुआ. लेकिन सामान्य तौर पर, रोमन शासन ने स्थिरता प्रदान की।

इसने अराजकता या बदतर सरकारों की तुलना में अधिक न्याय प्रदान किया। इसने वास्तव में कोरिंथ में पॉल की रक्षा की, जहां से पॉल इसे लिख रहा है। इसने पहले कोरिंथ में उसकी रक्षा की थी।

यह इस पत्र के बाद भी उसकी रक्षा करेगा। रोमन शासन ने साम्राज्य में व्यापार और संचार के लिए व्यापक स्थान दिया। तो, इस संगठित समाज के लाभ भी थे।

और कर्तव्यों में से एक यह था कि आप करों का भुगतान करेंगे, न कि केवल उन करों का जिन्हें आप पसंद करते हैं, बल्कि आप करों का भुगतान करेंगे। साम्राज्य का संपत्ति कर लगभग एक प्रतिशत था। और साथ ही, एक मुख्य कर भी था, जो स्वाभाविक रूप से, आनुपातिक रूप से, अमीरों की तुलना में गरीबों पर बहुत अधिक कठिन था।

आपके पास बहुत सारे स्थानीय कर भी थे। यहीं से सबसे भारी कर और सीमा शुल्क बकाया आएगा। लेकिन फिर आपके पास वह अनाज था जो मिस्र से भेजा जा रहा था और कुछ स्थानों पर भारी कर लगाया गया था।

कर राजस्व का उपयोग, एक कंकाल प्रांतीय प्रशासन के लिए किया जाता था, जो प्रांतीय प्रशासन का एक बहुत छोटा स्तर था। उनका उपयोग रोमन सड़कों के लिए किया गया था, और सेनाओं के लिए बनाया गया था, लेकिन सभी ने उनसे लाभ कमाया। लेकिन उनका उपयोग उन सेनाओं के लिए भी किया जाता था जिनका उपयोग लोगों को दबाने और लोगों को जीतने के लिए किया जा सकता था, और अतीत में इस तरह से इस्तेमाल किया गया था और यहूदी परिप्रेक्ष्य से, यहूदी विद्रोह में भी इस तरह से इस्तेमाल किया जाएगा।

इनका उपयोग शाही मंदिरों के निर्माण में किया जाता था। पॉल ने यह नहीं कहा कि आप ईसाई केवल उस हिस्से के लिए कर का भुगतान करें जिससे आप सहमत हैं। आप जानते हैं, ऐसे कई तरीके हो सकते हैं कि सरकार उन करों का उपयोग उन तरीकों से करती है जिनसे हम सहमत नहीं हैं।

पॉल यह नहीं कहता कि आप उस राशि को अपने करों से रोक सकते हैं। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि सविनय अवज्ञा के लिए कोई जगह नहीं है। फिर, हमने कुछ क्षण पहले चरम मामलों में इसके बारे में बात की थी, लेकिन यह इस अल्पसंख्यक ईसाई आंदोलन के लिए उचित नहीं था।

वास्तव में ऐसा करने के लिए सरकार में उनके पास कोई अधिकार नहीं है। पॉल के लिखने से कुछ समय पहले, रोम में कुछ करों ने महत्वपूर्ण विवाद खड़ा कर दिया था। इसके अलावा गैर-नागरिकों, जैसे कि यहूदी विश्वासियों को जिन्हें रोम से निष्कासित कर दिया गया था और जो हाल ही में लौटे थे, उन पर भी कर लगता था जो रोमन नागरिकों को नहीं देना पड़ता था।

श्रद्धांजलि। इसीलिए वे श्लोक छह में कहते हैं, तुम श्रद्धांजलि अर्पित करो। खैर, पॉल को इसका भुगतान नहीं करना पड़ा।

वह एक रोमन नागरिक था। मुझे लगता है कि इस सब में, मेरा मतलब है, यह एक सामान्य विषय था, लेकिन मुझे लगता है कि इसकी भाषा, शायद वह विशेष रूप से वही दोहरा रही है जो यीशु ने सिखाया था। जो सीज़र का है वह सीज़र को दो और जो ईश्वर का है वह ईश्वर को दो।

खैर, सीज़र का क्या था? उदाहरण के लिए, इस सिक्के पर सीज़र की छवि और उपशीर्षक है। जो ईश्वर का है उसे ईश्वर को दे दो। खैर, भगवान की छवि किसमें है? भगवान को स्वयं दे दो।

श्लोक सात में, वह यह भी कहते हैं, जिसका सम्मान करना है उसका सम्मान करो। वहाँ थे, अधिकांश राष्ट्रों ने बलिदान दिया और सम्राट की छवि पर धूप चढ़ायी। यहूदिया को इससे छूट दी गई थी।

उन्हें बस सम्राट के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करना और सम्राट की ओर से बलिदान देना आवश्यक था। जब क्रांतिकारियों ने मंदिर पर कब्ज़ा कर लिया, मेरा मतलब है, उन्हें बहुत सी चीज़ों के लिए माफ़ किया जा सकता था, लेकिन जब उन्होंने सम्राट की ओर से बलिदान देना बंद कर दिया, तो यह रोम के खिलाफ युद्ध की घोषणा थी। इसलिए ऐसा करने की अपेक्षा थी।

आराधनालयों में, आप राज्य के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और इसकी अनुशंसा पहले तीमुथियुस अध्याय दो में भी की गई है। हम अपने नेताओं के लिए प्रार्थना करते हैं और यह शायद हममें से उन लोगों के लिए कहा जाना चाहिए जो लोकतंत्र में रहते हैं। इसमें केवल उन लोगों के लिए प्रार्थना करने के लिए नहीं कहा गया है जिन्हें हमने वोट दिया है, बल्कि जो भी सत्ता में है, हमें उनके लिए प्रार्थना करने की जरूरत है, जिस राष्ट्र का हम हिस्सा हैं उसके कल्याण के लिए प्रार्थना और प्रार्थना करते रहना चाहिए।

यिर्मयाह कहता है, उस स्थान के कल्याण के लिए प्रार्थना करें जहां आपको निर्वासित किया गया है। और सबसे पहले पतरस ने हमें एक विदेशी भूमि में निर्वासितों के रूप में चित्रित किया। हम आने वाली दुनिया के हैं, लेकिन हम इस दुनिया में रहते हैं, और निवासी एलियंस के रूप में, हमें उस दुनिया की भलाई के लिए भी काम करना चाहिए जिसमें हम रहते हैं।

तो, श्लोक आठ से 10 में वह नैतिकता के हृदय के बारे में बताते हैं, नैतिकता का हृदय प्रेम है। यह 12:9 से 13:7 तक चरमोत्कर्ष है। ध्यान रखें, हमने इसे रोमनों को लिखे पूरे पत्र में देखा है। रोमन ईसाई कानून को लेकर बंटे हुए हैं।

पॉल कहते हैं कि कानून का मूल एक दूसरे से प्रेम करना है। तो, अब तक उन्होंने जो भी बातें कही हैं उनमें एक-दूसरे को खुद से ऊपर सम्मान देना, उन लोगों का सम्मान करना जो सत्ता में हैं, अपने पड़ोसियों का ख्याल रखना, यहां तक कि जो दुश्मन हैं, और उनसे प्यार करना भी शामिल है। ये सभी चीज़ें हमारे पड़ोसी से प्रेम करने में समाहित हैं।

अब, कभी-कभी उनमें से कुछ चीज़ें विस्तार के मामलों में एक-दूसरे के साथ टकराव में आ जाती हैं, लेकिन दिल, इसका सिद्धांत, प्यार, वह है जो हमें मार्गदर्शन कर सकता है कि हमें हमेशा दूसरों की सेवा करने और दूसरों से प्यार करने का प्रयास कैसे करना चाहिए और कभी-कभी प्रयास करना चाहिए इस पर काम करना कि बड़े पैमाने पर कुछ ऐसी चीज़ों का पता कैसे लगाया

जाए जिनके बारे में हम ठीक से नहीं जानते कि उन्हें एक साथ कैसे फिट किया जाए। यह सर्वोच्च आदेश था। इस अवधि में कुछ यहूदी शिक्षक, और वास्तव में इससे कई साल पहले, यीशु के समय में, हमने इसके बारे में यहूदी स्रोतों में भी पढ़ा था, साथ ही, गॉस्पेल यहूदी स्रोत हैं, लेकिन अन्य यहूदी स्रोतों के साथ-साथ गॉस्पेल में भी, गैर-ईसाई यहूदी स्रोतों के साथ-साथ यहूदी ईसाई स्रोतों से पता चलता है कि इस अवधि में फरीसियों के बीच यह एक बड़ी बहस थी।

सबसे बड़ा आदेश क्या है? कई लोगों ने सोचा कि अपने पिता और अपनी माँ का सम्मान करना सबसे बड़ा आदेश था। इसके लगभग एक या दो पीढ़ी बाद, रब्बी अकीबा कहते हैं कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना सर्वोच्च आदेश है। ठीक है, यीशु ने मार्क अध्याय 12 में कहा था कि अपने अंदर की हर चीज़ के साथ ईश्वर से प्रेम करना सबसे पहले है, और फिर उसके बाद, दूसरा है अपने पड़ोसी से प्रेम करना, और वह उन दोनों को गेज़र हाशवा के यहूदी व्याख्यात्मक सिद्धांत के माध्यम से जोड़ सकता है, जोड़ रहा है दो पाठ।

वे वैसे ही शुरू करते हैं। वाया हवता, तुम्हें प्यार होगा। खैर, प्राचीन काल में ऐसे बहुत से लोग थे जो प्यार को महत्व देते थे, जो सोचते थे कि यह एक अच्छी बात है, लेकिन प्राचीन काल में यह एक ऐसा आंदोलन था जहां वह केंद्रीय शिक्षा थी, जैसे 1 कुरिन्थियों 13 शैली।

आपके पास यह है, यीशु इसे जॉन 13 में एक अलग तरीके से कहते हैं, एक दूसरे के साथ बात करते हुए, मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि तुम एक दूसरे से प्यार करो जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है। यदि तुम एक दूसरे से वैसा ही प्रेम रखो जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, तो इस रीति से हर कोई जान लेगा कि तुम मेरे चले हो। अब, लैव्यव्यवस्था 19.18 में पहले ही कहा गया है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।

इसलिए, एक दूसरे से प्रेम करना कोई नई आज्ञा नहीं थी। जिस चीज़ ने इसे एक नई आज्ञा बना दिया, वह थी एक-दूसरे से प्रेम करना जैसा कि मैंने तुमसे प्रेम किया है, यहाँ तक कि एक-दूसरे के लिए अपने प्राण तक दे देना। मार्क अध्याय 12, मैथ्यू 22, ल्यूक अध्याय 20, यीशु इस बारे में बात करते हैं, अपने पड़ोसी से प्यार करने के बारे में, लेकिन जेम्स अध्याय 2 में, शाही कानून अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करना है।

गलातियों अध्याय 5, पॉल इस मुद्दे पर फिर से विचार करता है जब वह गलातियों 5:14 के बारे में बात करता है, कि यही सब कुछ सारांशित करता है। यह अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना है और वह आत्मा के अनुसार चलने आदि के बारे में बात करता है। खैर, यह यहाँ भी है, यह कानून के सारांश के रूप में कार्य करता है, जो हम देखते हैं उसके अनुरूप है।

यीशु ने मैथ्यू अध्याय 22, श्लोक 39 और 40 में भी कहा, अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। यदि आप इन दो आज्ञाओं का पालन करते हैं जिनका उसने अभी उल्लेख किया है, ईश्वर से प्रेम करना, और अपने पड़ोसी से प्रेम करना, तो यही संपूर्ण कानून है। एक और यहूदी शिक्षक थे जिन्होंने ऐसा ही कुछ कहा था, कम से कम यह तो कहा जाता है कि उन्होंने ऐसा ही कुछ कहा था।

मुझे लगता है कि यह ट्रेक्टेट शब्द के तल्मूड में है, जहां हिलेल एक बहुत सम्मानित संत थे। यह माना जा रहा है कि उन्होंने यहां जो कहा, उसके बारे में परंपरा को सही ढंग से संरक्षित किया गया था, लेकिन हिलेल से पूछा गया कि क्या वह एक पैर पर खड़े होकर पूरे टोरा को पढ़ा सकते हैं। और उनकी प्रतिक्रिया थी, दूसरों के साथ वह मत करो जो तुम नहीं चाहते कि वे तुम्हारे साथ करें।

वह संपूर्ण टोरा है। और यीशु ने मैथ्यू अध्याय 7 और पद 12 में ऐसा ही कुछ कहा था। लेकिन यहाँ वह इसका उपयोग ईश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए भी करता है।

यह कानून का सारांश है। और यही कानून का मर्म है। मीका, व्यवस्थाविवरण, और अन्य ग्रंथ कभी-कभी आपको कानून के मर्म का सारांश देंगे।

और यीशु के अनुयायी, पॉल से जेम्स तक ईसाई आंदोलन, व्यापक रूप से समझते थे कि प्रेम ईसाई नैतिकता का दिल था। और यीशु ने हमारे लिए यही प्रदर्शित किया जब, जैसा कि पॉल ने इससे पहले कुछ अध्यायों में कहा था, उसने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया। यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया।

13:8 आपस में प्रेम रखने के सिवा कोई कर्ज़ नहीं। प्राचीन काल में ऋण एक गंभीर समस्या थी। रोमन निजी ऋण आमतौर पर लगभग 12% ब्याज पर होते थे, हालाँकि जैसा कि मैंने बताया, एक बहुत ही असाधारण मामले में एक व्यक्ति था जिसने पूरे शहर पर 50% ब्याज लगाया क्योंकि वह जानता था कि वे हताश थे।

प्राचीन काल में कर्ज़ एक बड़ी समस्या थी। और हमने पहले इसका उल्लेख किया था। और पुराने नियम में भी इसे हतोत्साहित किया गया है, यदि आपको ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है, नीतिवचन 22:7, उधारकर्ता ऋणदाता का नौकर बन जाता है।

लेकिन एक कर्ज़ है जो हम सभी पर एक-दूसरे का बकाया है क्योंकि भगवान ने हमसे प्यार किया है। हमें इसका बदला चुकाने का तरीका ईश्वर से प्रेम करना है, लेकिन साथ ही एक-दूसरे से भी प्रेम करना है। हम एक दूसरे के ऋणी हैं।

और फिर पॉल उदाहरण देता है कि प्रेम कैसे कानून को पूरा करता है। और कानून में पांच आज्ञाओं में से, 10 आज्ञाओं में से पांच आज्ञाएं जो विशेष रूप से निर्गमन 20, 13 से 17 में पड़ोसी के संबंध में हैं, आपको एक अतिरिक्त मिल गया है जो भगवान के शब्द और मानव शब्द दोनों पर लागू हो सकता है, यह इस पर निर्भर करता है कि आप कैसे दिखते हैं इस पर। लेकिन वह अपने मतलब का उदाहरण देने के लिए 10 आज्ञाओं में से चार का हवाला देता है।

खैर, फिर वह उस चीज़ पर आता है जिसका मैंने उल्लेख किया था, 13:11 से 14 तक, जहां वह अपने श्रोताओं को नींद से जागने के लिए बुलाता है। प्राचीन लेखक अक्सर नींद का प्रयोग लाक्षणिक रूप में करते थे। बेशक, उन्होंने इसका शाब्दिक उपयोग भी किया, लेकिन अक्सर उन्होंने इसे आलंकारिक रूप से उपयोग किया।

एक तरह से उन्होंने इसे आलंकारिक रूप से इस्तेमाल किया वह मृत्यु को संदर्भित करने के लिए था, लेकिन वह इसका उपयोग यहां इस तरह नहीं कर रहे हैं। इसके अलावा, इसका उपयोग कभी-कभी ध्यान न देने या सतर्क न रहने और सतर्क न रहने के लिए लाक्षणिक रूप से भी किया जाता है। और सतर्कता को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था, न केवल व्यापक संस्कृति में और न केवल रात्रि प्रहरियों में, जिनका उपयोग कई स्थानों पर किया जाता था।

लेकिन यीशु इसका उपयोग अपनी वापसी के लिए तैयार होने की बात करने के लिए करते हैं। मरकुस 13:36, वह उसका उपयोग करता है। पॉल 1 थिस्सलुनिकियों 5, श्लोक दो से आठ में इसे फिर से उपयोग करता है।

और मैं अगली स्लाइड से कुछ की तुलना करने जा रहा हूं, जहां वह जागते और शांत रहने की बात करता है। दूसरे भले ही रात को नशे में हों या सो रहे हों, परन्तु प्रभु का दिन रात में चोर के समान आ रहा है। इसलिए जाग्रत रहें, सतर्क रहें, तैयार रहें।

यह शाब्दिक शारीरिक अनिद्रा का परामर्श नहीं है, बल्कि केवल सतर्क रहना है। इफिसियों 5:14, प्रकाश के लोगों को संबोधित करता है, यह कहता है। यह कहता है, सोए हुए व्यक्ति उठो, मृतकों में से उठो और मसीह तुम पर प्रकाश डालेगा।

और यह यशायाह 52:1 को उद्धाटित कर रहा है, जागो, जागो, अपने आप को शक्ति में ढाल लो, सिष्योन, जिसका उल्लेख हम बहुत जल्द देखेंगे। और यशायाह 60.1, उठो, चमको क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ गया है और प्रभु का तेज तुम्हारे ऊपर उदय हुआ है। पॉल ने रोमियों 13 को लिखने से बहुत पहले 1 थिस्सलुनीकियों को लिखा था।

और इसलिए, हम इसे देखने जा रहे हैं, भले ही रोमन पलट नहीं सके, हम यह सुनिश्चित करने के लिए इसे देखने जा रहे हैं कि हम पॉल के उपदेशों को समझते हैं। पॉल जागते रहने की बात करता है। वह सतर्क रहने की बात करते हैं।

1 थिस्सलुनिकियों में, रात लगभग बीत चुकी है। वह रात में चोर की तरह प्रभु के दिन के आने की बात करता है। रात के कर्म, जिनमें रंगरेलियां मनाना, शराब पीना, यौन ज्यादतियां शामिल हैं।

वहां वह रात की गतिविधियों, नींद, जो कोई समस्या नहीं है, और नशे के बारे में बात करता है। दिन करीब है. वह दिन अंधेरे में रहनेवालों को आश्चर्यचकित कर देगा।

1 थिस्सलुनिकियों में, प्रकाश डालना, प्रकाश और दिन के बच्चे। रोमियों 13, 1 थिस्सलुनीकियों 5 में ज्योति के कवच, विश्वास और प्रेम की कवच, और मुक्ति का टोप धारण करना। मुक्ति निकट है, 13:11, और परमेश्वर ने हमें 1 थिस्सलुनीकियों 5:9 में क्रोध के लिए नहीं, बल्कि मुक्ति के लिए नियुक्त किया है। ठीक है, आपने इसे एक साथ रखा है और यह स्पष्ट है, अगर यह पहले से ही स्पष्ट नहीं था, कि वह जागने के बारे में जो बात कर रहा है वह यह है कि हमें प्रभु की वापसी की तलाश करनी चाहिए।

जब हमने पहले विश्वास किया था तब की तुलना में अब मुक्ति अधिक निकट है। मेरा मतलब है, यह स्पष्ट है कि समय पहले की तुलना में अब देर से आया है, लेकिन वह इसका उपयोग उन्हें प्रभु की वापसी के लिए तैयार रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कर रहा है। और जब वह मुक्ति के बारे में बात करता है, तो पॉल अक्सर इसका उपयोग वर्तमान या अतीत के संदर्भ में करता है, आप जानते हैं, भगवान ने हमारे लिए क्या किया है, लेकिन वह इसे कभी-कभी भविष्य के लिए भी उपयोग करता है, जैसा कि वह यहां बात कर रहा है।

मोक्ष निकट आ रहा है. अध्याय 5 और पद 9, हम उसके द्वारा क्रोध से बचेंगे। वह भी 1 थिस्सलुनीकियों 5 में है, हम उसके द्वारा क्रोध से बचेंगे।

क्रोध उसी चीज़ का उल्लेख करता है जिसके बारे में उसने रोमियों 2, पद 5 में बात की थी, क्रोध का दिन, परमेश्वर के धर्म न्याय का रहस्योद्घाटन, निर्णय का दिन। आस्तिक के रूप में हम सभी, पूरे इतिहास में ईसा मसीह ने हमारे लिए जो किया है, उससे बचाए गए हैं। रोमियों 5.9, हम उसके द्वारा क्रोध से बचेंगे।

5:10 हम उसके प्राण से बचेंगे। हमारे पास अध्याय 10, छंद 9 और 13 में फिर से भविष्य निष्क्रिय है, जो कोई भी प्रभु का नाम लेगा, उसे बचाया जाएगा। वही भविष्य का विचार, 1 कुरिन्थियों 3:15, हम बच जायेंगे।

1 कुरिन्थियों 5:5, जहां वह इस व्यक्ति को उसके शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपने की बात करता है ताकि न्याय के दिन उसकी आत्मा बचाई जा सके, इत्यादि। अंततः विचार बच गया। तो, वे कहते हैं, प्रकाश का कवच पहन लो, 13.12. खैर, यह छवि वास्तव में तब फिट बैठती है जब वह जागने के बारे में बात करता है, क्योंकि जागने के बाद, आप अपने कपड़े पहनते हैं, हालांकि अधिकांश यहूदी किसान वास्तव में सोते हैं, अधिकांश यहूदी गरीब किसान अपने कपड़े, अपने आंतरिक वस्त्र पहनकर सोते हैं निश्चित रूप से, और तब आप बाहरी परिधान पहनेंगे जब आप वास्तव में, यदि यह बिल्कुल ठंडा था, तो आप अपने बाहरी परिधान में सोएंगे, आप इसे कंबल के रूप में उपयोग करेंगे।

लेकिन किसी भी स्थिति में, जागो, अपने कपड़े पहनो, और यह छवि यशायाह 52.1 में भी आपके पास है। जागो, सिंघो, अपने कपड़े पहन लो। अब, सद्गुणों से आच्छादित होने या किसी सकारात्मक चीज़ से आच्छादित होने की यह छवि, आपके पास प्राचीन साहित्य में कहीं और है, और आपने इसे पुराने नियम में शामिल किया है। अब, निम्नलिखित में से सभी आपके पास अंग्रेजी अनुवाद में नहीं हैं, आपके पास ग्रीक अनुवाद में हैं, लेकिन न्यायाधीश 6:34, जहां आत्मा ने नेतृत्व करने के लिए गिदोन को कपड़े पहनाए, 1 इतिहास 12.18, आत्मा ने एक अर्थ में अनुसरण करने के लिए अमासाई को कपड़े पहनाए, सार्वजनिक रूप से डेविड के प्रति वफ़ादारी की घोषणा करना।

2 इतिहास 24:20 यहोयादा के पुत्र जकर्याह को भविष्यद्वाणी करने के लिये आत्मा ने वस्त्र पहनाया। कुछ अन्य यहूदी ग्रंथों में, स्यूडो-फिलो 27:9-10, आत्मा ने किना को युद्ध के लिए तैयार

किया, स्यूडो-फिलो की बाइबिल पुरावशेष। यह बात आत्मा से परिपूर्ण होने, आत्मा द्वारा सशक्त होने के समान है।

खैर, श्लोक 14 में, वह स्वयं मसीह को धारण करने के बारे में बात करने जा रहा है। वह ईश्वर के संपूर्ण कवच को पहनने जा रहा है, जैसा कि इफिसियों 6 में बताया गया है, यशायाह 15:9 में ईश्वर के कवच से कुछ कल्पना का उपयोग करते हुए, मुझे लगता है कि यह है। लेकिन यहाँ, हम स्वयं मसीह को पहनते हैं, और इस तरह, हम प्रकाश के कवच को पहनते हैं।

खैर, कवच की छवि। यहूदी लोग अंत समय की लड़ाई की उम्मीद कर रहे थे, और वह अंत समय के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन सटीक कल्पना के लिए शायद यहां अधिक प्रासंगिक है, दार्शनिक अक्सर लड़ाइयों, जुनून के खिलाफ लड़ाई और झूठी विचारधाराओं के खिलाफ लड़ाई के बारे में आलंकारिक रूप से बात करते थे। यदि आप कवच के बारे में पॉल की सोच पर अधिक विवरण प्राप्त करना चाहते हैं, 1 थिस्सलुनीकियों 5:8, और फिर इफिसियों 6:10-18 में बाद के बिंदु पर और अधिक विकसित तरीके से। मैं वहां थोड़ा अतिरिक्त जोड़ रहा हूँ।

आप इसे 13-17 तक सीमित कर सकते हैं, लेकिन किसी भी स्थिति में, हम इसके बारे में और अधिक बात कर सकते हैं। लेकिन वह छवि का उपयोग हमेशा एक ही तरह से नहीं करता है। मेरा मतलब है, 1 थिस्सलुनीकियों 5.8 में, यह विश्वास की कवच है, जबकि इफिसियों 6 में, यह धार्मिकता की कवच है, दुष्ट के उग्र तीरों को बुझाने के लिए विश्वास की ढाल है।

रोमन सेनाओं को अक्सर अजेय माना जाता था जब तक कि वे रैंकों को नहीं तोड़ते थे, और वे आगे बढ़ते थे क्योंकि उनके सामने ये आयताकार ढालें होती थीं, और यदि वे कछुआ संरचना का उपयोग करते थे, तो उनके पीछे की दूसरी पंक्ति आयताकार ढाल बनाती थी ढाल उनके स्वयं के सिर और उनके सामने वाले व्यक्ति को ढकती है, और इस प्रकार तीर बस ढालों में टकराते थे, और यदि ज्वलंत तीर होते थे, तो रोमन अपनी ढालें तैयार रखते थे ताकि तीर बस बाहर निकल जाएं। लेकिन पॉल यहाँ छवि को अधिक विकसित नहीं कर पाया। वह बस इसका संक्षेप में उल्लेख कर रहा है।

वह रात्रि की भी बात करता है। यह नशे की पार्टियों का समय है। यह गुप्त कृत्यों का समय है जब लोग ऐसे काम करते हैं जिनके बारे में वे नहीं चाहते कि दूसरे लोगों को पता चले।

लेकिन हमें रात के लोगों की तरह नहीं रहना चाहिए। हमें उस समय के लोगों की तरह रहना चाहिए क्योंकि हम पहचानते हैं कि प्रभु आ रहे हैं। निस्संदेह, यह उतनी जल्दी नहीं आया जितनी पॉल को उम्मीद थी।

फिर, अन्यजातियों की पूर्णता अभी तक नहीं आई थी, और यहूदी लोगों की वापसी, वह चीजें जिनकी उन्हें शायद बहुत जल्द होने की उम्मीद थी, और अगर हम वास्तव में प्रभु के वापस आने के लिए उत्सुक हैं, तो ठीक है, ईश्वर संप्रभु है, और ईश्वर ने अपनी संप्रभु योजना में हमें उसमें भूमिका निभाने के लिए दिया है, और हो सकता है कि ईश्वर आपके हृदय को जागृत करने के लिए संप्रभु रूप से आपको छू रहा हो ताकि हमें यह महसूस हो सके कि हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि अन्यजातियों की पूर्णता इसमें आए, कि दुनिया के लोग अच्छी खबर सुनते

हैं, और यह जागने का मतलब है, भगवान की दृष्टि प्राप्त करना, अनंत काल के प्रकाश में वास्तव में क्या मायने रखता है, इस पर भगवान का शाश्वत दृष्टिकोण प्राप्त करना इसका हिस्सा है। खैर, रिश्तों का हिस्सा इन सामान्य बयानों से परे है जो पॉल देता रहा है। यह कुछ ऐसी चीज़ों पर आता है जो वास्तव में उन मुद्दों में से अधिक थीं जिनके बारे में लोग चर्च और क्षेत्र में लड़ रहे थे।

आप जानते हैं, जब हम कहते हैं, हर किसी के साथ अच्छा व्यवहार करें, तो हमारी सभाओं में लोग कहेंगे, हाँ, यह कहने के लिए एक अच्छी बात है, और आप कहते हैं, तो आप, इस व्यक्ति के खिलाफ गपशप करना बंद करें। अच्छा, तो फिर हम घर के कुछ ज्यादा ही करीब आ रहे हैं, है ना? जब आप ऐसा करते हैं तो आपको वास्तव में किसी को बुलाने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन पॉल यह निर्दिष्ट नहीं करता है कि कौन क्या कर रहा है, लेकिन वह उन मुद्दों पर उतरता है जो वास्तव में रोम में विश्वासियों के बीच एक समस्या है। रोमियों 14, आयत 1 से 23।

हमें एक-दूसरे का सम्मान करने की ज़रूरत है, और हमें गौण मुद्दों पर एक-दूसरे के मतभेदों का सम्मान करने की ज़रूरत है। हमने पहले भी इस बारे में कुछ बात की है, और यह सुसमाचार का मर्म है, और पॉल सुसमाचार के मर्म पर वापस आता रहता है, और हमें सुसमाचार के मर्म पर वापस आते रहने की आवश्यकता है। यही हमें मसीह में एक शरीर बनाता है।

ऐसे गौण मुद्दे हैं जहां हमारे बीच कुछ असहमतियां होती हैं, यहां तक कि कभी-कभी हम कैसे व्यवहार करते हैं इस पर भी। हमें प्राथमिक मुद्दों, जैसे एक-दूसरे से प्रेम कैसे करें, को गौण मुद्दों पर मार्गदर्शन करने देना चाहिए। एक-दूसरे को स्वीकार करना या स्वागत करना निश्चित रूप से एक प्राथमिक मुद्दा है।

फिलेमोन 17 को छोड़कर, पॉल अपने पत्रों में प्रोस लुंबानो का उपयोग केवल तीन बार स्वीकार करने या प्राप्त करने के लिए करता है, और वे सभी तीन बार इस खंड में हैं। 14:1, वह अनुभाग खोलता है। 14:3, अभी भी खंड की शुरुआत की ओर, और फिर 15:7 में, खंड के अंत में, यह वास्तव में उस जगह से आगे चला जाता है जहां अध्याय टूटता है।

तो यह पवित्र दिनों में भोजन के रीति-रिवाजों की उनकी चर्चा को दर्शाता है, जिसका अर्थ है, ठीक है, ये वे मुद्दे हैं जिनसे आप संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन हमें इस बात की आवश्यकता है कि एक-दूसरे का मूल्यांकन न करें, एक-दूसरे का स्वागत करें, एक को स्वीकार करें। एक और। 15:7, इसलिए एक दूसरे का स्वागत करें, जैसे मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिए आपका स्वागत किया था, और 15:8 से 12 में निम्नलिखित छंद एक दूसरे का स्वागत करने के बारे में पाठ हैं, विशेष रूप से यहूदी और अन्यजातियों के एक साथ भगवान की पूजा करने के बारे में पाठ। तो, 14:1 से 15:7 तक का मुद्दा, यहूदियों और अन्यजातियों को एक दूसरे का स्वागत करना चाहिए।

अब रोम के चर्च में यही मुद्दा था। बेशक, इसमें मुक्ति का ऐतिहासिक आयाम है, लेकिन वहां एक सिद्धांत यह भी है कि हमारे विभाजन, विशेष रूप से जातीय और सांस्कृतिक विभाजन, हमें एक-दूसरे का स्वागत करने की आवश्यकता है। हमें एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप करने की

जरूरत है, या जैसा कि हाल ही में किसी ने मुझसे कहा, मैं जातीय मेल-मिलाप के बारे में बात नहीं करने जा रहा हूँ, मैं जातीय मेल-मिलाप के बारे में बात करने जा रहा हूँ।

मेरे पास दोबारा प्रस्तावना नहीं है क्योंकि मुझे नहीं लगता कि हम शुरुआत में ही सहमत हो गए हैं। तो, किसी भी मामले में, यह अध्याय भोजन के रीति-रिवाजों से बहुत संबंधित है। रोमियों 14 का अधिकांश भाग इसी से संबंधित है, और भोजन के कई अलग-अलग रीति-रिवाज थे।

ग्रीक दार्शनिक संप्रदायों में, पाइथागोरस मांस से परहेज करने के लिए जाने जाते थे क्योंकि उनका मानना था, वे पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, और उनका मानना था कि मांस में आत्माएं होती हैं, और जानवरों में आत्माएं होती हैं, और सेम में भी। उनका मानना था कि बीन्स में भी आत्माएं होती हैं, जैसा कि आप इस तथ्य से बता सकते हैं कि उन्हें खाने के बाद, मांस भारी हो गया था और पचाने में मुश्किल था। तो, फलियों के साथ, आपको बाद में गैस होगी, और उन्होंने कहा कि यह फलियों की आत्मा है जो बाहर आ रही है, और वे इस पर इतना दृढ़ता से विश्वास करते थे कि जब कुछ लोग कुछ पाइथागोरस पर अत्याचार कर रहे थे, जैसा कि कहानी किसी भी मामले में होती है, कि वे भाग रहे थे, वे दूर जा रहे थे, और वे फलियों के एक खेत में आ गए, और फलियों को रौंदने का जोखिम उठाने के बजाय, उन्होंने फलियों की रक्षा के लिए खुद को मरने दिया।

इसके बारे में पाइथागोरस की कहानी है। इसलिए, उनके भोजन के विशिष्ट रीति-रिवाज थे। कई लोग विशिष्ट भोजन रीति-रिवाजों के लिए जाने जाते थे।

रोमन जानते थे कि उनके रीति-रिवाज विशिष्ट थे। वे जानते थे कि ब्रिटेन के रीति-रिवाज विशिष्ट थे। लीबियाई और भारतीय, वे जानते थे कि कई अलग-अलग लोगों के बीच विशिष्ट रीति-रिवाज थे।

और सूअर के मांस से परहेज. अब यह एक यहूदी प्रथा थी, लैव्यव्यवस्था 11:7, लेकिन यह कुछ अन्य लोगों, मिस्र के पुजारियों, कुछ अन्य प्राचीन स्रोतों के बीच भी प्रचलित थी, जो हमें फोनीशियन, शायद सीरियाई बताते हैं, अगर वे यहूदी लोगों के बारे में बात नहीं कर रहे थे, क्योंकि कभी-कभी गैर-यहूदी लेखक उन्हें सीरियाई के रूप में देखा। पहले के समय में, हित्तियों ने सूअरों को अशुद्ध माना।

तो, ऐसे अन्य लोग भी थे जिन्हें सूअर का मांस पसंद नहीं था। असल में, मेरी पत्नी, जब वह एक शरणार्थी थी, वास्तव में, वह यह पसंद नहीं करती कि मैं वह कहानी सुनाऊँ। मुझे बस इतना कहना है कि उसे कुछ बहुत ही गंदे सूअरों का अनुभव हुआ।

यहूदी कश्त. मुझे लगता है कि यहां मुद्दा यहूदी कश्त का है। इसके बारे में हम अगली स्लाइड में बात करेंगे.

लेकिन यहूदी कश्त, यहूदी कोषेर कानून, क्या स्वच्छ भोजन माना जाता था और क्या अशुद्ध माना जाता था। मैकाबीज़ के समय में यहूदी लोगों को कोषेर रखने के लिए बहुत कष्ट सहना पड़ा था। और इसलिए यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था।

यह अन्यजातियों की दुनिया में उनकी पहचान का एक विशिष्ट चिह्न था। इसके लिए कई लोगों ने उनका मजाक भी उड़ाया। इसके लिए वे व्यापक रूप से जाने गए और उनका मजाक उड़ाया गया।

उदाहरण के लिए, एक नेता, जुवेनल नामक व्यंग्यकार, इसके लिए उनका मजाक उड़ाता है। हालाँकि रोम में कुछ ऐसे लोग थे जो उनका अनुसरण करते थे, कुछ गैर-यहूदी उनके रीति-रिवाजों का सम्मान करते थे, और यहूदी लोग इन रीति-रिवाजों के बारे में इतने दृढ़ थे, उन्होंने कहा, ठीक है, शायद वे सही हैं और वे सूअर का मांस नहीं खाएँगे इत्यादि। पर। लेकिन वे व्यापक रूप से जाने गए और उनका मजाक उड़ाया गया।

अधिकांश प्रवासी यहूदी इन रीति-रिवाजों का पालन करते थे। फिलो खाद्य कानूनों का रूपक प्रस्तुत करता है, ठीक उसी तरह जैसे अरिस्टियास का पत्र, फिलो से पहले बनाया गया एक अलेक्जेंड्रियन यहूदी दस्तावेज़, इन रीति-रिवाजों का रूपक करता है, लेकिन फिर भी कहता है कि प्रतीकात्मक रूप से वे जो इंगित करते हैं उसे पूरा करने के लिए आपको उन्हें अभी भी अक्षरशः बनाए रखना चाहिए। और उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि अलेक्जेंड्रिया में कुछ यहूदी लोग थे जो फिलो की तुलना में अधिक उदार थे, जिन्होंने उन्हें शाब्दिक रूप से भी नहीं रखा था।

लेकिन बहुसंख्यक प्रवासी यहूदियों ने इनका अक्षरशः पालन किया। लैविकस 11, छंद 44 और 45, कश्रुत के बारे में अध्याय के अंत में, पवित्र या पवित्र होने के बारे में बात करता है। इसलिए, इन खाद्य रीति-रिवाजों ने इज़राइल को अन्य देशों से प्रभावी रूप से अलग कर दिया होगा जिनके अलग-अलग खाद्य रीति-रिवाज थे।

लेकिन अब मिशन सभी लोगों के लिए है। इसलिए, पॉल नहीं चाहेगा कि आप आवश्यक रूप से हर मामले में सांस्कृतिक रूप से अलग हो जाएं। मेरा मतलब है, सांस्कृतिक रूप से अन्य लोगों से अलग होने के हमारे पास इस तथ्य से पर्याप्त कारण हैं कि हम आसपास नहीं सोते हैं या हम गपशप नहीं करते हैं या हम यौन उन्मुख चुटकुलों पर नहीं हंसते हैं, या कुछ भी।

हम अपने आस-पास के कम से कम कई लोगों से भिन्न होंगे। लेकिन कश्रुत यहाँ। कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, यह विशेष रूप से यहूदी भोजन रीति-रिवाजों का उल्लेख नहीं कर सकता क्योंकि इसमें श्लोक 2 में सब्जियों और श्लोक 21 में शराब का उल्लेख है।

खैर, निश्चित रूप से रोम में कोषेर कसाई थे। निश्चित रूप से आपको रोम में कोषेर मांस मिल सकता है। आपको पूर्ण शाकाहारी बनने की ज़रूरत नहीं थी।

और जहां तक शराब की बात है, ठीक है, जब तक इसे पहले से ही किसी बुतपरस्त देवता को अर्पित नहीं किया गया था, शराब को भी स्वीकार्य माना जाता था। तो फिर इन चीजों से परहेज क्यों? लेकिन यह अतिशयोक्तिपूर्ण हो सकता है कि पॉल कह रहा है, कि यदि आपको किसी को नाराज करने से बचने के लिए उस हद तक जाना है और इससे बचना है कि आपके सामने एकमात्र विकल्प सूअर का मांस और सब्जियां हैं और इससे किसी को ठेस पहुंचेगी, यदि आप

सूअर का मांस खाते हैं, तो बस सब्जियां खाओ. यदि यह किसी के लिए बाधा बनने जा रहा है, तो आपको जो करना है वह करें, भले ही आपको अपने परिवेश में केवल शाकाहारी बनने की आवश्यकता हो।

और यहूदी लोगों को कभी-कभी कट्टरपंथी चीजें करनी पड़ती थीं जब वे ऐसी सेटिंग में होते थे जहां उनकी अन्य चीजों तक पहुंच नहीं होती थी। मेरा मतलब है, प्राचीन दुनिया में अधिकांश लोग वैसे भी नियमित अवसरों पर मांस का खर्च नहीं उठा सकते थे। इन उत्सवों में मूर्तियों को बलि चढ़ाने के बाद इसे रोम और कोरिथ और उसके जैसी जगहों पर त्योहारों में बाँट दिया जाता था।

यीशु में विश्वासियों के लिए यह पहले से ही सीमा से बाहर था, या कम से कम यह अत्यधिक आग्रह किया गया था कि वे इससे निपटें नहीं। प्रकाशितवाक्य 2:14 और 20 में इसकी कड़ी निंदा की गई है। लेकिन जोसेफस हमें कुछ यहूदी कैदियों के बारे में बताता है।

उन्हें कई वर्षों तक बंदी बनाकर रखा गया और उनके पास भोजन के बहुत सीमित विकल्प थे। वे नट्स और अंजीर पर गुजारा करते थे क्योंकि यही एकमात्र कोषेर चीज़ थी जो उनके लिए उपलब्ध थी। तो, क्या यहां यहूदी भोजन रीति-रिवाजों के बारे में बात हो रही है? मुझे लगता है कि यह सचमुच स्पष्ट है।

14:14, वह शुद्ध बनाम अशुद्ध की भाषा का प्रयोग करता है। यह अत्यंत स्पष्टतः यहूदी भाषा है। इसके अलावा, संदर्भ यहूदियों और अन्यजातियों के एक दूसरे का स्वागत करने या स्वीकार करने के बारे में है।

14:1 और 3 और 15:7 से 12 तक भी। और फिर पूरा पत्र भी। मेरा मतलब है, आपके पास यहूदी-गैर-यहूदी मुद्दा है और आपके पास कानून है।

तो शायद यही यहाँ की मुख्य पृष्ठभूमि है। लेकिन निस्संदेह, इसके निहितार्थ हैं। मेरा मतलब है, पॉल 1 कुरिन्थियों 8 में मूर्तियों को चढ़ाए जाने वाले भोजन के बारे में बात करते हुए कुछ ऐसा ही कहता है।

हालाँकि, वहाँ, मूर्तियों को चढ़ाए जाने वाले भोजन के कारण उनका तर्क थोड़ा अलग होने वाला है, वह अध्याय 8 में एक दूसरे को ठोकर न खाने देने के बारे में सिद्धांत देते हैं। वह अध्याय 10 के अंत में उस पर वापस आते हैं। यह उनका सामाजिक है तर्क। बीच-बीच में वह धार्मिक तर्क भी देते हैं.

ठीक है, वास्तव में बीच में, वह खुद को अध्याय 9 में अपने अधिकारों को छोड़ने का एक उदाहरण देता है। लेकिन फिर अध्याय 10 में, वह एक धार्मिक तर्क के साथ बात करके शुरू करता है, ठीक है, आप जानते हैं, ये बातें उदाहरण के रूप में लिखी गई थीं हम। और इस्राएल के लोग, जब वे जंगल में थे, तो उन्होंने मूर्तियों को चढ़ाया हुआ भोजन खाया और उन्होंने व्यभिचार किया, जैसे, उसे यह कहने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन जैसे तुम लोग कुरिन्थ में कर रहे हो। और भगवान ने उन्हें मार डाला, तो शायद आप इस बारे में सोचना चाहेंगे।

और फिर वह इस बारे में बात करता है कि आप प्रभु के प्याले और राक्षसों के प्याले में कैसे भाग नहीं ले सकते। 10.20, वह इन्हें राक्षसों, मूर्तियों के पीछे की आत्माओं के रूप में बोलता है, और कहता है कि आप भगवान की मेज में, राक्षसों की मेज में भाग नहीं ले सकते। वह परिचित भाषा थी जिसके बारे में लोग बात करते थे, भगवान की सेरापिस की मेज या मूर्ति के मंदिर में आप कुछ खा सकते थे।

और अधिकांश भोजनों में, खाने-पीने से पहले वे किसी देवता को प्रसाद अर्पित करते थे। इसलिए, पॉल कह रहा है, धार्मिक दृष्टि से आप वह भोजन नहीं खा सकते जो मूर्तियों को बलि चढ़ाया गया हो। इसलिए, वह उन्हें एक समाजशास्त्रीय तर्क देता है, एक धार्मिक तर्क तैयार करता है।

तो, यह वास्तव में आपके पास जो कुछ है उससे थोड़ा अधिक मजबूत है, जो कि सिर्फ समाजशास्त्रीय तर्क है। यह मूर्तियों का भोजन खाने जितना गंभीर मामला नहीं है। यह बस है, किसी को ठोकर खाकर गिरने का कारण मत बनाओ।

उन खाद्य रीति-रिवाजों में से किसी एक को तुच्छ न समझें। यहूदी लोगों को हेय दृष्टि से मत देखो। उन्होंने अध्याय 11 श्लोक 18 से 21 में पहले ही कहा है, अन्यजाति यहूदी लोगों को नीची दृष्टि से नहीं देखते हैं।

अब वह इसे और भी अधिक विस्तार से संबोधित करने जा रहे हैं, उनके रीति-रिवाजों को तुच्छ न समझें। वह कुछ को मजबूत और कुछ को कमजोर बताते हैं। यह शायद एक उपाधि है, कमजोर शायद ताकतवर लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली उपाधि थी, लेकिन आप यहां देख सकते हैं कि पॉल वास्तव में उन लोगों के लिए चिंतित है जिन्हें मजबूत लोग कमजोर मानते हैं।

जब आप यहूदी विश्वासियों के साथ भोजन कर रहे हों तो ऐसा भोजन न करें जिससे उन्हें ठोकर लगे। या शायद अन्य यहूदी लोगों के साथ जो आपके मित्र हैं और आप उम्मीद कर रहे हैं कि वे विश्वास करेंगे। यदि इससे उन्हें ठोकर लगेगी, तो क्या आप कहेंगे कि आप हमारे ईश्वर और हमारे धर्मग्रंथों में विश्वास करते हैं? लेकिन ये देखो।

ठोकर का मतलब सिर्फ व्यक्तिगत स्वाद का मामला नहीं है। मुझे उस तरह का खाना पसंद नहीं है या मुझे आपके तरह का संगीत पसंद नहीं है। ठोकर का अर्थ है किसी को विश्वास से भटकाना।

इस शब्द का प्रयोग सिराच की पुस्तक में पहले से ही इस तरह किया गया था। दरअसल, पुराने नियम में इसका प्रयोग इसी तरह किया गया है। ठोकर लगना एक गंभीर बात थी।

और यह उस शब्द के समतुल्य है जिसे वह 14:4 में अपने स्वामी के लिए उपयोग करता है, वे खड़े होते हैं या गिर जाते हैं। तो, ठोकर का संबंध गिरने से है, अध्याय 11 और श्लोक 22 में गिरी हुई शाखाओं की तरह। किसी को विश्वास से दूर मत गिराओ।

और निश्चित रूप से यीशु ने इसके बारे में अक्सर बात की थी। इन नन्हें बच्चों को ठोकर वगैरह खाने का कारण मत बनाओ। हमें सम्मान करने की जरूरत है, हो सकता है कि हम उनकी प्रथा

से सहमत न हों, लेकिन हमें इसका सम्मान करना होगा और उन पर अपने तरीके थोपने की जरूरत नहीं है।

हम अगले सत्र में इसके बारे में और अधिक विस्तार से, रोमियों 14 के विवरण पर बात करेंगे।

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 12:14-14:1, परिचय पर सत्र 13 है।